Omniscient
(An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal)
Vol 2 Issue 2 April-June 2024 EISSN: 2583-7575

उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में पशुपालकों की बढ़ती समस्याएं

सतेन्द्र कुमार

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
Corresponding author: satendrakumar893@gmail.com
Available at https://omniscientmjprujournal.com

सारांश

उत्तर-प्रदेश पशुपालन एवं दूग्ध उत्पादन में भारत में प्रथम स्थान होने के बावजूद महानगरो में केवल श्रम आपूर्ति वाला राज्य बनकर रह गया है। ग्रामीणों द्वारा पशुपालन से विमुख होकर रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन में वृद्धि एवं अन्ना गोवंश पशुओं की संख्या में वृद्धि किसी भी ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए शुभ संकेत नहीं है। उत्तर-प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में पशुपालन से सम्बंधित अनेक अध्ययन प्रस्तुत किये गए है, इन अध्ययनों में पशुपालन की समस्याओं का भिन्न-भिन्न कारण दिया गया है। इन कारणों से बुंदेलखंड क्षेत्र में पशुपालन की समस्याओं की जानकारी प्राप्त होती है। अतः इस अध्ययन से हमें पशुपालन की समस्याओ की रुचिकर जानकारी प्राप्त होगी।

कुंजी शब्द *– पशुपालन, पशुपालन योजनायें , वर्गीकृत पशुपालन*

प्रस्तावना

पशुपालन भारत की अनमोल धरोहरो में एक है। मनुष्यों के पूर्वज जब फसल उत्पादन के विषय में कुछ नहीं जानते थे, जंगलों में झुंड के रूप में जीवन व्यतीत करते थे। मनुष्य अपने आहार के लिए छोटे-छोटे पशु पक्षियों का शिकार कर वनस्पतियों फल फूलों का सेवन करके अपना जीवन यापन करते थे। जैसे-जैसे मनुष्य का विकास हुआ वह अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप विकास करता गया, सभ्यता के प्रारम्भिक काल से ही मनुष्य ने अपने भोजन तथा कार्य के लिए पशुओं को पालतू बनाया। उसने दूध के लिए गाय, भैंस, बकरियों आदि का पालन प्रारम्भ कर दिया। कृषि कार्य के लिए बैल, यातायात के लिए घोडे तथा माँस, ऊन के लिए बकरी, भेडों का पालन प्रारम्भ किया।

पहले मनुष्य के लिए पशुओं पर आश्रित रहना मजबूरी थी, आज आधुनिकीकरण, शहरीकरण के युग में पशुओं से प्राप्त खाद्य पदार्थों की उच्च गुणवत्ता के कारण आज मनुष्य पशुओं से प्राप्त खाद्य पदार्थों का सेवन करने लगा है। यह सभी विकसित देशों में देखने को मिल रहा है कि जनसंख्या के बढते दबाव कृषि जोत के आकार में कमी बेरोजगारी आदि समस्याएं पशुपालन की महत्ता को बढा रहे हैं क्योंकि आज का मनुष्य उपरोक्त समस्याओं का निराकरण पशुपालन व्यवसाय से होता देख रहा है। इसीलिए पशुपालन की प्रासंगिकता आज और भी महत्वपूर्ण प्रतीत होती है।

शोध प्रश्न

प्रस्तुत शोध समस्या हेतु निम्नलिखित शोध प्रश्नों का निर्माण किया गया है -

1. बुंदेलखंड के पशुपालकों को मुख्यतः किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है?
2. पशुओं के लिए चारा और पानी की उपलब्धता में आने वाली चुनौतियाँ क्या हैं?
3. बुंदेलखंड में पशुपालन योजनाओं के तहत कितने लोग लाभान्वित हो रहे हैं?
4. सरकारी योजनाओं और अनुदानों का लाभ पशुपालकों तक कैसे पहुँचता है?

अध्ययन का उद्देश्य

1. बुंदेलखंड के पशुपालकों की समस्याओं का अध्ययन करना।
2. बुंदेलखंड में पशुपालन योजनाओं के लाभार्थियों का अध्ययन करना।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु संख्यात्मक एवं गुणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। यह अध्ययन प्राथमिक सर्वेक्षण के आकड़ो पर आधारित है अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जनपद का चयन उद्देश्य पूर्ण ढंग यादृच्छिक चयन प्रकिया द्वारा किया गया है। तत्पश्चात चित्रकूट जनपद के दो ब्लॉकों मऊ एवं रामनगर लिया गया है। मऊ ब्लाक से 3 गाँव बरगढ़, बम्बुरी, खंन्ड़ेहा एवं रामनगर ब्लॉक के 3 गाँव लौरी, बसिंघा, खोर गाँव को यादृच्छिक नमूना विधि से लिया गया। प्रत्येक गाँव से 48-48 सोद्देश्य पूर्ण कुल 288 पशुपालकों को लिया गया है। जो कि पशुपालकों एवं दूध उत्पादकों के निष्पादन सम्बन्धी जांच एवं बाधाओं की पहचान हेतु उपयुक्त है। अध्ययन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। प्रदत्त विश्लेषण हेतु प्रतिशत विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन निष्कर्ष एवं विवेचना

शोध अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार प्राप्त निष्कर्षों की विवेचना निम्नलिखित है–

पशुपालको की समस्याएँ

प्राप्त प्रदत्तों के गुणात्मक विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उत्तर प्रदेश का बुंदेलखंड क्षेत्र मुख्यतया ग्रामीण असंगठित क्षेत्र है, जहाँ पशुपालकों द्वारा लागत,लाभ, कीमत, उत्पादन, उत्पादकता, सीमांत उत्पादन इत्यादि के विश्लेषण की कमी पायी जाती है, बाजार की उपलब्धता की कमी पायी जाती है, अर्थात बाजार उनके ग्रामीण इलाकों

से दूर होता है| जहां पर आने-जाने के लिए साधन तथा समय की समस्या होती है| दूध एवं दूध से बने उत्पाद को रखने की अवसंरचना की कमी होती है, और प्रसंस्कृत उत्पादों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता है तथा पारंपरिक उत्पाद दही, घी, छाछ, खोवा आदि बनाएं एवं बेचे जाते हैं, जिनका कीमत प्रचलित बाजार से कम ही उन्हें प्राप्त होता है, जबकि उन्हें पशुओं के लिए पोषक तत्व तथा दवा एवं अनाज उनको बाजार की प्रचलित कीमत पर ही खरीदना पड़ता है, जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से किसानों पशुपालकों तथा पशुओं पर होता है जिसकी वजह से वह पशुपालन से विमुख हो जाते हैं तथा पशुपालन को समाप्त करने के लिए सोचते हैं या तो वह पशुपालन व्यवसाय को स्थिर अर्थात पशुओं की संख्या में वृद्धि नहीं करते हैं एवं वह अपने परिवार एवं युवाओं को इस व्यवसाय से दूर रहने की सलाह देने लगते हैं|

वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में पशुपालन एवं डेयरी उद्योग में मृत पशुओं के शरीर को नष्ट करने के लिए व्यक्तियों एवम् स्थाई स्थान की समस्या मुख्य है क्योंकि मृत पशुओं को उठाने तथा उनके चमड़े, सीघ तथा हड्डियों को निकालने एवं उनको एकत्र करने के लिए आज कोई भी तैयार नहीं होता है| उसका सबसे बड़ा कारण सामाजिक है ऐसे व्यक्तियों जो मृत पशुओं के चमड़े, सीघ तथा हड्डियों को एकत्र करके बेचते हैं उनको समाज में उचित सम्मान नहीं प्राप्त होता है एवं उन्हें छुआ छुत का सामना करना पड़ता है तथा उन्हें हमेशा समाज से दूर रखा जाता है जिससे वर्तमान समय में कोई भी व्यक्ति इस कार्य को करना नही चाहता है जिससे कि वर्तमान में पशुओं के मृत शरीर को कहीं भी सड़क के किनारे फेंक दिया जाता है जिससे कि पर्यावरण प्रदूषण तथा अन्य प्रकार की बीमारियां बढ़ रही है।

उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में अधिकतर पशुपालक पशुपालन को व्यवसाय के रूप में ना अपनाकर केवल और केवल सहायक व्यवसाय के रूप में सीमित रखते हैं जिससे कि पशुपालन का ग्रामीण क्षेत्रों में उचित विकास नहीं हो पाया है एवं पशुपालकों के द्वारा पशुपालन पर अपना पूरा ध्यान नहीं देते हैं जिससे कि उनका उत्पादन, लागत एवं लाभ प्रभावित होता है एवं उन्हें यह व्यवसाय घाटे का प्रतीत होने लगता है और वह इसे कम करने या बंद करने के बारे में सोचने लगते हैं एवं अपनी भावी पीढ़ी को इसे ना करने की सलाह भी देने लगते हैं यदि पशुपालक द्वारा पशुपालन को मुख्य व्यवसाय के रूप में अपनाया जाए तो बेरोजगारी की समस्या का समाधान हो सकता है तथा महिलाओं एवं बच्चों के अतिरिक्त समय का उपयोग भी आसानी से घर पर उत्पादक रूप में ही किया जा सकता है|

पशुपालन हेतु विभिन्न कारक एवं पशुपालकों का वितरण

वर्गीकृत पशुपालन	**पशुपालकों की संख्या**
लाभ अधिक है	15
व्यवसाय के रूप में	10
खेतो के उर्वरक रूप में	93
कृषि कार्य में सहायता हेतु	28
हरी घास या चारा उपलब्धता के कारण	142
कुल पशुपालक	288

अध्ययन क्षेत्र के प्राथमिक सर्वेक्षण के आंकड़ों पर आधारित निष्कर्षों की विवेचना

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो रहा है, की अध्ययन क्षेत्र में पशुपालन को लाभ का व्यवसाय मानने वाले पशुपालकों की संख्या बहुत कम इसके विभिन्न कारण हो सकते हैं। जैसे कि अध्ययन क्षेत्र में पशुपालकों के द्वारा अधिकतम देशी नस्ल के पशुओं का पालन किया जाता है जिससे की उनसे प्राप्त होने वाला उत्पादन भी कम होता है। जबकि लागत दुधारू पशुओं के बराबर ही होती है, एवं अनुउत्पादक पशुओं की संख्या अधिक होती है| व्यवसायिक रूप से अपनाने वाले पशुपालकों की संख्या भी अच्छी नहीं होने के विभिन्न कारण है। जैसे की अध्ययन क्षेत्र में पशुपालकों को किसी प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं होता है। जिससे की वह पारम्परिक पशुपालन ही करते हैं तथा उन्हें किसी प्रकार की सरकारी सहायता प्राप्त नहीं होती है।

पशुपालन सम्बन्धी योजनाओं के जानकारी और लाभ आधारित पशुपालकों का वितरण

लाभार्थी / गैर लाभार्थी	योजनाओं की जानकारी है(%में)	योजनाओं की जानकारी नहीं है (%में)	कुल
लाभ प्राप्त है	18	12	30
लाभ प्राप्त नहीं है	20	238	258

अध्ययन क्षेत्र के प्राथमिक सर्वेक्षण के आंकड़ों पर आधारित।

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो रहा है, कि अधिकांश उत्तरदाताओं को योजनाओं की जानकारी का अभाव होने के कारण उनका समुचित लाभ नहीं प्राप्त हो पा रहा है। इसके विभिन्न कारण है जैसे कि पशुपालन सम्बन्धित योजनाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार ना होना एवं अधिकांश पशुपालकों का अशिक्षित एवं निरक्षर होना आदि है। अतः पशुपालन

सम्बन्धी योजनाओं एवं नीतियों के व्यापक प्रचार प्रसार की आवश्यकता है जिससे कि अध्ययन क्षेत्र के पशुपालकों को लाभ प्राप्त हो सके एवं वह पशुपालन एवं डेयरी उत्पादन से अपनी आय में वृद्धि कर सके।

निष्कर्ष

अतः इस प्रकार से देखा जाये तो अभी भी पशुपालन एवं डेयरी उद्योग में किसी ऐसे व्यवस्था का जन्म नहीं हुआ है कि कृषक कीमत प्रणाली के रास्ते से लाभ सृजित कर सके, प्रोत्साहित होकर रोजगार बढ़ा सके, कुल उत्पादन बढा सके पशुओं के नस्ल में सुधार हो सके, बाजार का आकार बढा सके यदि हुए भी है। तो उनका उचित किर्यान्वयन ना हो पाने के कारण उसका शत प्रतिशत लाभ ग्रामीणों को प्राप्त नहीं हो सका है। उपरोक्त जैसी समस्याओ के कारण अंततः रोजगार सृजन के मौजुदा स्तर पर एवं उसके संभवनाओ पर बुरा प्रभाव डालता है। इस प्रकार की समस्या को देख कर या समस्या से आहत होकर या तो पशुपालक पशुपालन व्यवसाय को समाप्त करने के बारे में सोचता है या मौजुदा स्तर पर व्यवसाय को रोके रखता है या अधिक बढ़ाने की इच्छा नहीं रखता है इसी प्रकार की समस्या को देख कर देश के ग्रामीण युवा इस व्यवसाय से जुड़ना नहीं चाहते है। यंहा तक पशुपालक स्वयं ही अपने परिवार के युवाओ को इस व्यवसाय से बाहर कर दे रहे है तथा व्यवसाय नहीं करने की सलाह देते है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रो में पशुपालन केवल जीवनयापन का साधन मात्र रह गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उत्तर प्रदेश में पशुपालन एवं डेयरी उद्योग में सुधार हेतु सरकार द्वारा हस्तक्षेप की आवश्यकता है। जैसा कि रोजगार की प्रवृत्ति से स्पष्ट होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीनों एवं मजदूरों के रोजगार के लिए मनरेगा जैसी योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जिसमें भ्रष्टाचार के कारण रोजगार की स्थिति अच्छी नहीं है। पशुपालन एवं डेयरी उद्योग द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार सृजन आसानी से किया जा सकता है तथा प्राथमिक क्षेत्र से भूमिहीन मजदूरों एवं किसानों की निर्भरता कम किया जा सकता है एवं पशुपालन डेयरी उद्योग से सम्बन्धित योजनाओं की समीक्षा कर समस्याओं के समाधान के साथ योजनाओं कों पारदर्शी बनाने की अवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची

तिवारी, डी0 एन0, (1989) वन आदिवासी एवं पर्यावरण, शांति पब्लिकेशन, इलाहाबाद

पाण्डेय, जी॰ (2007), भारतीय जनजातिय संस्कृति कंसैप्ट, पब्लिशिंग कंपनी नई दिल्ली।

बोहरा, एस ॰ (2016), कुरूक्षेत्र।

कुमार, जी॰ (2016) भारत में डेयरी की सफलता एवं चुनौतिया, कुरूक्षेत्र ।

एनिमल एंड हसबेंडरी बोर्ड रिपोर्ट, (2017-18)

आर्थिक सर्वेक्षण, (2018-19)

20वीं पशुगणना रिपोर्ट पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय (2019),

केन्द्रीय सांख्यिकीय कार्यालय रिपोर्ट, (2018-19)

ट्राइब्स इन पर्सपेक्टिव, (2019) नई दिल्ली मित्तल पब्लिकेशसन